>

Title: Need to step up vigil on Indo-Nepal border to safeguard the interests of India.

श्री हर्ष वर्धन (महाराजगंज, उ.प्र.): सदियों से भारत एवं नेपाल के मध्य सौहार्द एवं मैत्रीपूर्ण संबंधों का ही परिणाम है कि आज तक भारत एवं नेपाल के नागरिकों को बिना पासपोर्ट एवं वीजा के निर्बाध आवागमन की सुविधा प्राप्त है।

नेपाल में राजशाही के पतन के पश्चात् अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पकड़ बनाने में प्रयासरत चीन भी परिस्थितियों का लाभ लेकर नेपाल में अपना प्रभाव बढ़ाकर भारत पर दबाव बनाने के लिए प्रयासरत है।

भारत-नेपाल के मध्य 1747 किलोमीटर की सीमारेखा पर बेरोक-टोक आवाजाही है। इसका फायदा विभिन्न शरारती किस्म के तत्व उठा रहे हैं। आतंकवादी गतिविधियों के खतरों के प्रति सतर्क रहकर भविष्य में पैदा होने वाली संभावित चुनौतियों से निपटने हेतु समय रहते कार्यवाही राष्ट्रीय हित में आवश्यक है।

अभी हाल में नेपाल में माओवादी धड़े द्वारा निमंत्रित किए गए एक चीनी दल को उत्तर प्रदेश के जनपद महाराजगंज एवं सिद्धार्थनगर की सीमा के समीप हिन्दी भाषा का अध्ययन कराने एवं भारतीय रीति-रिवाजों से परिचित कराने का प्रयास संज्ञान में आया है। नेपाल के माओवादियों की चीनी शासकों से नजदीकियां किसी से छिपी नहीं है। यह गंभीर स्थिति है।

ऐसी दशा में भारत एवं नेपाल सीमा पर चौकसी बढ़ाने के साथ ही नेपाल से राजनयिक एवं कूटनीतिक स्तर पर भी इस बदले परिदृश्य में प्रभावी कार्यवाही भारतीय हितों के लिए आवश्यक है।